फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
★ a ballad against work
★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation
The books are free

नई सीरीज नम्बर 133 जुलाई 1999

# माहौल ऐसा ही है इसलिये

हमारी बातचीत में अक्सर यह शब्द उछलते हैं: क्या करें, माहौल ही ऐसा है! यह कहते समय हमारे सामने जो तस्वीरें होती हैं उनमें से कुछ यह हैं :

– हजार-आठ सौ की नौकरी का भी मुश्किल से मिलना

– गुण्डागर्दी का यह आलम कि किये हुये काम के पैसे भी नहीं देते

– किसी पार्टी के पास जाओ- किसी सरकारी दफ्तर में जाओ- किसी अदालत में जाओ, कहीं कोई सुनवाई नहीं होती

## मजदूरों का कोई नहीं है

फरीदाबाद के उदाहरण लें तो : यहाँ आधे से ज्यादा मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। बन्द की गई फैक्ट्रियों के मजदूरों को हिसाब भी नहीं दिया जाता। एक लाख के करीब मजदूरों को रोज यहाँ 12 घन्टे की ड्युटी करनी पड़ती है। मशीनों से रोज यहाँ हाथ कटते हैं और फैक्ट्रियों में "एक्सीडेन्टों" में मजदूरों का मरना रुटीन है। यह सच है कि मजदूरों का कोई नहीं है।

वास्तव में माहौल ऐसा ही है इसलिये इसे बदलने की जरूरत है। इसी सिलसिले में हम यह विचार- विमर्श आरम्भ कर रहे हैं। माहौल को बदलने के लिये क्या- क्या करें इसके बारे में आइये अपने- अपने विचार व अनुभव आपस में बाँटें। शुरुआत में हम पर्दे के पीछे की हकीकत को ले रहे हैं।

## छुपाई जाती असलियत

मजदूरों को निचोड़ने का काम कम्पनियाँ करती हैं। जो निचोड़ होता है उसमें से आधे से ज्यादा सरकारें टैक्सों के रूप में ले लेती हैं। कर्ज पर ब्याज के रूप में बैंक 15 परसैन्ट के करीब ले लेते हैं। शेयर होल्डर 8-10 परसैन्ट के आस- पास ले लेते हैं और इतना ही कम्पनी के विस्तार के वास्ते इस्तेमाल होता है। मजदूरों को अपने द्वारा किये गये उत्पादन में से 2-3 परसैन्ट तनखा के रूप में दिया जाता है और इतना ही साहब लोग वेतन- भत्तों के रूप में ले लेते हैं। कट- कमीशन के तौर पर, दो नम्बर में मैनेजमेन्ट 15 परसैन्ट के करीब लेती है।

**मैनेजमेन्ट है :** बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स और उसके मातहत वाइस प्रेसीडेन्ट- जनरल मैनेजर- मैनेजर- सुपरवाइजर। मैनेजमेन्ट में पद के अनुसार कट- कमीशन में हिस्सा- पत्ती होती है। चीफ एग्जेक्युटिव, चाहे वो चेयरमैन हो अथवा मैनेजिंग डायरेक्टर, दो नम्बर में सबसे बड़ा हिस्सा लेता - लेती है। कम्पनियों का कोई मालिक नहीं होता। कम्पनियाँ संस्थायें हैं जिनकी संचालक मैनेजमेन्टें हैं।

मजदूरों को निचोड़ने का सबसे अधिक लाभ सरकारों को मिलता है इसलिये सरकारें कम्पनियों की प्रमुख रक्षक- संरक्षक हैं। पुलिस- फौज- जेल- अदालत- प्रशिक्षण- संस्कार- कानून- मीडिया का सुरक्षा चक्र सरकारें कम्पनियों को उपलब्ध कराती हैं।

उपरोक्त से जाहिर है कि मैनेजमेन्टों अथवा सरकारों से अपनी भलाई की उम्मीद करना नादानी है। इनका काम ही भय और निराशा का ऐसा माहौल बनाना तथा बनाये रखना है जहाँ मजदूरों को यह अधिक से अधिक निचोड़ सकें। इसलिये मैनेजमेन्टों और सरकारों की परेशानियाँ बढाने वाले कदम उठा कर ही मजदूर अपनी परेशानियाँ कम कर सकते हैं। **(जारी)**

## अनुभवों.... एस्कोर्ट्स मजदूरों की बातें (पेज तीन का शेष)

वाले, पोजीशन- अपोजीशन वाले सब लीडर मैनेजमेन्ट के पक्ष में एक हो गये हैं।

" लीडर बिक गये हैं। आटे में नमक वाली बात तो चल जाती है पर नमक में आटे वाली बात नहीं चलती।

" कई प्लान्टों में सब मजदूरों ने मैनेजमेन्ट को लिख कर दे दिया है कि हमारे वेतन में से यूनियन के वार्षिक चन्दे के तौर पर 50 रुपये नहीं काटे जायें बल्कि सिर्फ 12 रुपये काटे जायें।

"मैनेजरों को बस गिनती चाहिये। रिजेक्शन बहुत हो रहा है। जोर- जबरदस्ती से ऐसे ही होगा। हम लड़ाई- वड़ाई नहीं कर रहे पर साल- छह महीनों में मँडी में पिटने शुरू होंगे तब बड़े साहबों को मजदूरों की ताकत का पता चलेगा। हमारी राजी के बिना कम्पनी चल ही नहीं सकती – मैनेजर और लीडर जो चाहें कर लें।

## बरसी का पानी

" निर्जला एकादशी, 24 जून को इस बार एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने सेवा करने पर पाबन्दी लगाई और प्लान्टों में चन्दा करने से रोका। चन्दा किया और छुट्टी कर के वरकर सेवा में लगे। पानी और बर्तन कम्पनी से लेते थे – इस बार बाहर से लाये। पहले प्लान्टों के गेटों पर तम्बू लगाते थे, जी एम आदि से उद्घाटन कराते थे और एस्कोर्ट्स के बैनर लगा कर कम्पनी का प्रचार करते थे। इस बार गेटों से दूर तम्बू लगाये, कम्पनी का कोई बैनर नहीं लगाया, किसी साहब को नहीं बुलाया। नेता दूर से देखते रहे पर कोई लीडर पानी पीने नहीं आया। मीठा पानी पीते और पिलाते मजदूर कह रहे थे : यह एग्रीमेन्ट की पहली बरसी का पानी है।"

' मजदूर समाचार ' में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, मजदूर लाइब्रेरी में आराम से बैठ कर बतायें।

अपनी बातें अन्य मजदूरों तक पहुँचाने के लिये ' मजदूर समाचार ' में भी छपवाइये। आपका नाम किसी को नहीं बतायेंगे और आपके कोई पैसे खर्च नहीं होंगे।

महीने में एक बार ही ' मजदूर समाचार' छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। किसी वजह से सड़क पर आपको नहीं मिले तो 10 तारीख के बाद मजदूर लाइब्रेरी आ कर ले सकते हैं – फुरसत में कुछ गपशप भी हो जायेगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

# क्या करें ? क्या करें ? क्या करें ?

**मैनेजमेन्ट-लीडर-सरकार की त्रिमूर्ति पर दबाव डालने वाले कदम उठाना ही बनता है। इन लोगों की परेशानियाँ बढा कर ही मजदूर अपनी परेशानियाँ कम कर सकते हैं। अकेले-अकेले और पाँच-सात की टोली में तथा अपनी टोलियों में तालमेल वाले ऐसे हजारों कदम हैं जिन्हें हम आसानी से हर रोज उठा कर मैनेजमेन्ट-लीडर-सरकार की नाक में दम कर सकते हैं।**

**के.एस.डाई कास्टिंग मजदूर :** "किसी को 1100 तो किसी को 1200 रुपये वेतन देते हैं और वह भी टाइम पर नहीं देते। ओवर टाइम के पैसे तो और भी देरी से देते हैं। जो मजदूर 10-15 दिन काम करने के बाद छोड़ कर चला जाता है वह तनखा लेने आता है तो उसे गाली दे कर, मार कर भगा देते हैं – पैसे नहीं देते।"

**बाटा फैक्ट्री वरकर :** "मैनेजमेन्ट ने अपनी शर्तें थोपने के लिये 25 फरवरी को फैक्ट्री में तालाबन्दी की थी। 25 जून को चार महीने पूरे होने के बाद भी तालाबन्दी जारी है।"

**अल्फा टोयो वरकर :** "दूसरी साल में एग्रीमेन्ट के अनुसार 140 रुपये बढाने थे पर मैनेजमेन्ट ने नहीं बढाये जबकि प्रोडक्शन बढा दिया।"

**लालडी मजदूर :** "हफ्ते में एक भी छुट्टी करने पर साप्ताहिक छुट्टी के पैसे काट लेते हैं। यानि, एक छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काट लेते हैं। वरकर एतराज करते हैं, विनती करते हैं तो कहते हैं कि हम तो ऐसे ही करेंगे, जहाँ जाना है जाओ, हम तो काटेंगे।"

**कैजुअल वरकर :** "एग्रीमेन्ट से पहले **एस्कोर्ट्स** में कैजुअलों को ओवर टाइम काम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से देते थे पर अब सिंगल रेट से देने लगे हैं। 12 व 13 जून को कैजुअलों को ओवर टाइम के लिये बुलाया पर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने कहा कि इस काम के पैसे सिंगल रेट से देंगे – चाहो तो बदले में छुट्टी ले लो।"

**नूकैम प्लास्टिक मजदूर :** "28 मई को 18 मजदूरों को नौकरी से निकालने के पत्र मैनेजमेन्ट ने दे दिये हैं। कहते हैं कि केमिकल प्लान्ट नहीं चला सकते क्योंकि पहले 3 करोड़ रिश्वत देते थे पर अब 25 करोड़ रुपये माँगते हैं।"

**आयशर ट्रैक्टर अप्रेन्टिस :** "मैनेजमेन्ट हम से परमानेन्ट वरकरों से भी ज्यादा काम करवा रही है। इसके लिये अफसर हमें बहुत ही ज्यादा परेशान कर रहे हैं। आई.टी.आई. के बाद अप्रेन्टिसशिप की शर्त ने हमें आयशर मैनेजमेन्ट को कौड़ियों के मोल निचोड़ने को दे दिया है।"

**एजीको कन्ट्रोल मंजदूर :** "तनखा 7 तारीख से पहले देने की बजाय 12-13 को देते हैं। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट सिंगल रेट से भी नहीं देते – सिर्फ बेसिक पर देते हैं। साहब लोग गाली-गलौज बहुत करते हैं।"

**कोलाज इम्पेक्स मजदूर :** "ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। तनखा 18-20 तारीख से पहले नहीं देते। पी.एफ. किसी का नहीं काटते जबकि 300 से ज्यादा मजदूर हैं। हैल्पर को 1550 रुपये तनखा देते हैं। नौकरी देने से पहले कोरे कागजों पर कई जगह हस्ताक्षर करवाते हैं।"

**सिराको प्रेसिंग वरकर :** "फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट होते रहते हैं। तनखा लेट देते हैं, 27-28 तारीख को देते हैं।"

**एमफोर्ज मजदूर :** "जनवरी में डी.ए. के जो 172 रुपये आये थे वे मैनेजमेन्ट ने काट लिये हैं। सालाना इनक्रीमेन्ट तो वैसे ही नहीं दे रहे थे, अब ऊपर से डी.ए. के पैसे भी नहीं दिये।"

**क्लच आटो वरकर :** "मैनेजमेन्ट कहती है कि बैठ कर कोई काम नहीं होगा, 8 घन्टे खड़े-खड़े काम करो। सफाई-सफाई का तो मैनेजमेन्ट ने ऐसा आतंक मचा रखा है कि बड़े साहब ने एक कैजुअल वरकर के थप्पड़ मारा।"

**आटोपिन मजदूर :** "26 जून हो गई है और मैनेजमेन्ट ने मई की तनखा अब तक नहीं दी है। वेतन माँगते हैं तो मैनेजमेन्ट कहती है कि बैंकों में पैसे ही नहीं हैं क्योंकि सब पैसे कारगिल गये हैं। डी.ए. के हमारे 172 रुपये भी शायद कारगिल चले गये हैं।"

**मौर्या उद्योग वरकर :** "फैक्ट्री में पीने लायक पानी तक नहीं है। सीवर लाइन जाम है। लैट्रीनों में बदबू बरदाश्त से बाहर है। वेतन मात्र 1200 रुपये महीना है। लीडर तो हर जगह लोगों को बेवकूफ बनाते हैं।"

**न्यू एलनबरी मजदूर :** "मैनेजमेन्ट ने वर्क्स कमेटी बनाई है और उसमें दादा किस्म के लोग रखे हैं। कम्पनी में चक्कर लगाते यह कमेटी वाले आतंक का माहौल बनाने में मैनेजमेन्ट की मदद करते हैं।"

**इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड वरकर :** "लीडरों ने तो मजदूरों और स्टाफ को ऐसा फँसा दिया कि हम किसी घाट के नहीं रहे। क्या हिसाब मिलने का कोई रास्ता है ?"

**हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर :** "इस वक्त फैक्ट्री में अजीब स्थिति हो गई है। एक और प्लान्ट मैनेजमेन्ट ने बन्द कर दिया है। मजदूरों को जहाँ चाहे वहाँ लगा देती है अथवा बैठा कर रखती है। वेतन कटने की नौबत आ गई है।"

**सी.एम.आई. वरकर :** "एग्रीमेन्ट में प्रोडक्शन 48000 से बढा कर 60000 कर दिया। कहने को 210 रुपये बढाये परन्तु 700 रुपये इनसेन्टिव के खत्म कर के असल में 490 रुपये कम कर दिये। काम इतना बढा दिया है कि वेतन भी कटने की बात आ गई है। यूनियन ने हमें बुरी तरह फँसा दिया है।"

**हिन्दुस्तान सिल्क मिल मजदूर :** "इस वक्त आर्डर कम हैं। कच्चा माल कम रहता है, कुछ मशीनें बन्द रहती हैं। मैनेजमेन्ट ने खुद तो चुप्पी साध रखी है पर कुछ लोग यूनियन बनाने का शोर मचा रहे हैं। लगता है कम्पनी अब दल्लों के जरिये हम पर कहर ढायेगी।"

**श्याम अलॉय वरकर :** "ओवर टाइम पेमेन्ट में मैनेजमेन्ट बहुत गड़बड़ करती है। डबल की बजाय सिंगल रेट से तो देती ही है, यह सिंगल रेट भी किसी को बेसिक+डी.ए. पर और किसी को सिर्फ बेसिक पर। आठ घन्टे शिफ्ट के 80 रुपये और फिर 8 घन्टे ओवर टाइम के 35 रुपये !"

**टेकमसेह मजदूर :** "बल्लभगढ प्लान्ट में बॉन्ड भरवा कर मैनेजमेन्ट ने 250 ट्रेनी रखे हैं। महाप्रबन्धक कहता है कि अब जो परमानेन्ट वरकर हैं वे दस-दस हजार के पड़ रहे हैं और यह बढाया हुआ प्रोडक्शन भी नहीं दे सकते इसलिये इनमें से एक भी नहीं रखना। साथ ही साथ मैनेजमेन्ट 22-22 मजदूरों के बैच को बिहेवियर ट्रेनिंग दे रही है – दिल्ली से दो-तीन मनोवैज्ञानिक डॉक्टर आ कर हमें व्यवहार करना सिखा रहे हैं ! इन्सानियत नाम की चीज मैनेजमेन्ट में नहीं है।"

**हाई पोलीमर लैब्स वरकर :** "फैक्ट्री में 22 मई को और एक मजदूर की मौत हो गई – वह **भाटिया क्रेन्स** का वरकर था। फैक्ट्री में 8 जून को तेजाब का एक टैन्क फटा पर मजदूर बच गये।"

**कपूर लैम्प मजदूर :** "एग्रीमेन्ट के अनुसार दूसरी साल 226 रुपये बढने थे पर बढाये सिर्फ 15 रुपये। अब लीडर कहते हैं कि उनसे गलती हो गई – एग्रीमेन्ट में वृद्धि शब्द की जगह वर्दी शब्द लिखा गया !"

**ईस्ट इंडिया कॉटन मिल मजदूर :** "मैनेजमेन्ट पर्चे बाँट कर हमें डरा रही है। कहती है कि झुके नहीं तो कुछ नहीं मिलेगा, सर्विस-ग्रेच्युटी सब डूब जायेगा। साथ ही साथ मैनेजमेन्ट एक हजार मजदूरों की छँटनी के लिये लीडरों से नेगोसियेशन कर रही है। छँटनी के लिये कानून तक 34 दिन के हिसाब की बात करता है और 45-60-90-105 दिन के हिसाब के लिये सौदेबाजी होती है। लेकिन हमारे यहाँ ईस्ट इंडिया में तो 19 और 21 दिन के हिसाब की बातें करके ही लीडर नरम और गरम में बँट कर नेगोसियेशन कर रहे हैं। एक हजार की छँटनी के लिये कानूनी भुगतान तक से बचने के लिये स्वेच्छा से इस्तीफों के नाटक की तैयारी चल रही है। छँटनी के लिये 34 दिन की बजाय 19-21 दिन का हिसाब देने से जो करोड़ों रुपये बचेंगे उसमें कौन कितना लेगा इस पर सौदेबाजी हो रही है। यह सब करने के लिये सितम्बर 96 में की तालाबन्दी को इतना लम्बा खींचा गया है, आश्वासनों से मजदूरों को बिखेरा व भरमाया गया है और अब बढा-चढा कर डर फैलाया जा रहा है।"

# अनुभवों-विचारों-कदमों का आदान-प्रदान

*मैनेजमेन्टें कहती हैं कि फैक्ट्रियों के अन्दर और फैक्ट्रियों के बाहर एक–दूसरे को अपनी बातें बताना अनुशासन का उल्लंघन है। यह पते की बात है। मजदूरों द्वारा आपस में चर्चायें करना मैनेजमेन्टों की दुखती रग को छेड़ना है। मैनेजमेन्टों की तोपों को नाकारा करने के लिये मजदूरों के पास बातों , खूब बातों वाली मजेदार आरी–रेती–भट्टी है।*

**निकिताशा मजदूर :** " इस वक्त डर की वजह से कोई वरकर कुछ नहीं बोलता। प्रोडक्शन न दें तो वेतन कटे। माल खराब करें और पकड़े जायें तो नौकरी के लिये खतरा। बोलें तो किससे ? यूनियन तो मैनेजमेन्ट की पाकेट में है। लीडरों से तो और भी खतरा है। क्या कोई रास्ता बतायेंगे ?"

**नगर निगम वरकर :** " फैक्ट्रियों में मजदूरों के खिलाफ मैनेजमेन्टें जो तरीके इस्तेमाल कर रही हैं वैसे ही तरीके साहब लोग हमारे यहाँ अपना रहे हैं। अब तो सब जगह बराबर- सी कन्डीशन हो गई है। सरकार तो क्या , अब कोई कुछ नहीं कर सकता। अब तो जो काम करते हैं वही चाहेंगे तभी कुछ होगा। अभी सब वरकर अलग- थलग हैं लेकिन कब तक रहेंगे जबकि एक ही डन्डा हर जगह हाजिर है।"

**कटलर हैमर मजदूर :** " हमारे यहाँ कल (15 जून) चुनाव है जबकि यह बात साफ हो गई है कि हमारी समस्याओं का समाधान नेता नहीं कर सकते। कम्पनी अपनी समस्याओं का समाधान लीडरों के जरिये अवश्य कर लेगी। अनुभव तो यही कह रहा है।"

**केन्द्र सरकार वरकर :** " काफी समय से हम कई साथी मिल कर मजदूर समाचार पढते हैं और इस पर विचार- विमर्श करते हैं। हम लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अब यूनियन बनाना ही सबसे ज्यादा नुकसानदेह है क्योंकि यूनियनें ही मजदूरों को जाल में फँसाती हैं। मैनेजमेन्टें यूनियनों को पालती हैं ताकि इनके जरिये मजदूरों पर नियम- कानून थोप कर अपना काम पूरा कर लें।"

**झालानी टूल्स मजदूर :** " मैनेजमेन्ट की कमेटियों की गुण्डागर्दी की वजह से हमने बोलना कम किया। आपस में बातचीत कम करने , हमारे द्वारा बोलना कम करने के कारण मैनेजमेन्ट की गुण्डागर्दी बढती गई। 29 मार्च को फैक्ट्री गेट पर एक मजदूर की हत्या के बाद की चुप्पी का यह नतीजा रहा कि मैनेजमेन्ट ने फरवरी का वेतन 17 अप्रैल को देना शुरू किया तब चन्दे की दस रुपये की पर्ची डाल कर अपने हत्यारे लीडरी गिरोह के लिये 110- 110 रुपये हर वरकर के वेतन में से काट लिये। मार्च का वेतन जब मई में दिया तब फिर 10 रुपये चन्दे की पर्ची डाल कर मैनेजमेन्ट ने 60- 60 रुपये काट लिये। अप्रैल का वेतन अब जून के अन्त में देना शुरु किया तब भी दस रुपये चन्दे की पर्ची डाल कर मैनेजमेन्ट ने गुण्डागर्दी के लिये 60- 60 रुपये हमारी कटी- फटी तनखाओं में से काट लिये हैं। 21 महीनों से वेतन नहीं दे रही झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट को हमारे बोलने , हमारी बातों के बढने के कारण जनवरी 98 में वेतन देना फिर शुरू करना पड़ा था। लेकिन हमारा बोलना कम होने पर इधर दो और महीनों की तनखा भी बकाया हो गई है। हम आपस में बातचीत नहीं बढायेंगे तो मैनेजमेन्ट हम दो हजार मजदूरों के 40 करोड़ रुपये हड़प लेगी।"

## और , एस्कोर्ट्स मजदूरों की कुछ बातें :

" मैनेजमेन्ट बहुत तनाव पैदा कर रही है। धारा 144 लगा रखी है। दो वरकर खड़े हो कर आपस में बात नहीं कर सकते – नाम नोट होंगे। मशीन पर माल है या नहीं , लोडिंग है या नहीं , रहना अपनी मशीन पर ही है। पानी पीने जाने तक पर मैनेजर टोकते हैं। ट्रान्सफर धड़ल्ले से कर रहे हैं। टोका- टोकी बहुत ज्यादा है। कोई वरकर एक मशीन पर भेजने से परेशान कम होता है तो उसे दूसरी मशीन पर भेज देते हैं। भीतर- बाहर वरकर जब मिलते हैं तब यही चर्चा करते हैं कि इनका खात्मा कैसे हो।

" मैनेजमेन्ट से मजदूरों के छोटे- मोटे काम जो करवाते हैं वे प्लान्ट स्तर पर 'दल्ला' घोषित हैं। मैनेजमेन्ट की 15 दिन की अति सख्ती के बाद अब वे दल्ले ही डिपार्टमेन्टों में घूम- घूम कर कह रहे हैं कि 70 नहीं तो 65 बनाओ , 65 भी नहीं तो 60- 62 ही बनाओ , अभी भी बना दो – हम पैसे नहीं कटने देंगे। दल्लों को आगे करके मैनेजमेन्ट पीछे हट गई है। दल्ले बहुत सक्रिय हैं, निरन्तर धीमा जहर फैला रहे हैं।

" मशीनों पर लोहे की प्लेटें चिपका कर जो कपैसिटी दर्शाई थी वह बहुत ज्यादा थी – उनका दो- तिहाई उत्पादन ही हम देते थे। लेकिन अब उन लोहे की प्लेटों पर जो लिखा था उससे तीन- चार गुणा प्रोडक्शन बढाने का नाम आई.ई. नोर्म्स है।

" मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाये हैं कि समझाने के बावजूद वरकर आई.ई. नोर्म्स नहीं कर रहे। एग्रीमेन्ट की धारायें लिख कर पैसे काटने की धमकियाँ दी हैं। अब अन्तिम चेतावनी का नोटिस लगाया है।

" मजदूरों के गुस्से और असन्तोष को देख कर मैनेजमेन्ट असमंजस में है। मजदूरों के दबाव से घबरा कर बड़े साहब ने पुचकारने के लिये 4- स्ट्रोक मोटरसाइकिल सूरजपुर की बजाय यहाँ फरीदाबाद में बनाने की बात की है।

" छाँट कर मैनेजमेन्ट ने 46 फार्मट्रैक वरकरों की कुछ दिन तो प्लान्ट में क्लासें ली और अब उन्हें आर एण्ड डी भेज दिया है। वहाँ एक तरह से खाली बैठाये रखते हैं।

" जे सी बी में हम दो शिफ्ट में ओवर टाइम तथा 150 कैजुअलों की मदद से 8 गाड़ी बनाते थे। एग्रीमेन्ट के बाद मैनेजमेन्ट ने अधिकतर कैजुअल निकाल दिये हैं , ओवर टाइम बन्द कर दिया है , एक शिफ्ट कर दी है और उसमें 8 गाड़ियाँ माँग रही है। काम पहले ही बहुत ज्यादा था , अब तो हद कर दी है। मिनट तो क्या , सैकेन्ड तक पर मैनेजमेन्ट निगाह रख रही है – चाय तक के लिये जगह नहीं छोड़ सकते , कार्यस्थल पर ही चाय पीनी पड़ती है। इनसैन्टिव के 6700 तक बन जाते थे उन्हें 4000 फिक्स कर दिया है , एडहॉक के 3000 तक को 1000 फिक्स कर दिया है और ओवर टाइम के पैसे तो जीरो कर दिये।

" मशीनों से खाना बनेगा और बर्तन धुलेंगे। फस्ट प्लान्ट की कैन्टीन में 72 की जगह 30 वरकर ही रखेंगे। जिन्हें निकाल रही है उन्हें ट्रेनिंग दे कर प्रोडक्शन में रखने की बात मैनेजमेन्ट कह रही है। लेकिन परमानेन्ट मजदूरों को ही निकालना है तो हम कैन्टीन वरकरों को कहाँ रखेगी ?

" शॉकर डिविजन में सुपरवाइजरों के पास लिस्ट आई है। जहाँ 125 पीस बनते हैं वहाँ 550, जहाँ 240 बनते हैं वहाँ 800 और जहाँ 960 बनते हैं वहाँ 2000 पीस प्रति शिफ्ट बनाने की बातें हैं। डिविजन हैड कहता है कि उसे 270 वरकर ही चाहियें जबकि अभी 500 से ऊपर मजदूर हैं।

" सैकेन्ड प्लान्ट में से मैनेजमेन्ट ने एक ही दिन में 21 को 6 सैक्टर ट्रान्सफर कर दिया – किसी मजदूर से पूछा तक नहीं।

" एग्रीमेन्ट में ओवर टाइम की डबल रेट से पेमेन्ट की बात है पर मैनेजमेन्ट ने मेन्टेनैन्स वरकरों से ओवर टाइम करवा कर पैसे ही देने से इनकार कर दिया है। कहती है कि बदले में छुट्टी लो , यानि ओवर टाइम सिंगल रेट से।

" पूरी तरह किसी को नहीं बैठा रहे। बारी- बारी से काम करवा रहे हैं। एग्रीमेन्ट का पैसा लगने के बाद मैनेजमेन्ट हरकत में आयेगी। नौकरी से निकालने के लिये दबाव बढायेगी। कई मैनेजरों को कह दिया है कि सितम्बर तक दूसरी जगह नौकरी ढूँढ लो।

" एग्रीमेन्ट के बाद 15 दिन तक मैनेजमेन्ट ने औरंगजेब वाली सख्ती की। वरकर 8 घन्टे अपनी- अपनी मशीन पर खड़े रहे पर उत्पादन में कोई खास वृद्धि नहीं हुई। इस पर मैनेजमेन्ट फिर लीडरों को आगे लाई है। अन्दर और बाहर

**(बाकी पेज एक पर)**

## अपाहिज होते मजदूर....

**एक मजदूर :** "... चार- चार साल से काम कर रहे हैं उनको परमानेन्ट नहीं करते। कहने पर बाहर निकाल देते हैं। थप्पड़- घूँसे मारते हैं, माँ- बहन की गाली देते हैं। फोरमैन काम 36- 36 घन्टे करवाते हैं। किसी का हाथ कट जाये तो लोकल आफिस में पैसे दे कर, लेबर इन्स्पैक्टरों को पैसे दे कर चलताऊ काम करवा देते हैं। जिसका हाथ कट जाता है उसको वही काम करने के लिये मजबूर करते हैं ... फिर भी नहीं निकला तो कोई न कोई बहाना लगा कर मार- पीट कर निकाल देते हैं ... साल- भर में इस फैक्ट्री में कम से कम चार- पाँच लोग अपाहिज हो कर अपनी जिन्दगी को बर्बाद करके जीने पर मजबूर हो जाते हैं। पूरा ग्रेड किसी को नहीं देते .."

## ...और कारगिल

**एस्कोर्ट्स वरकर :** "मैनेजमेन्ट ने एक दिन की दिहाड़ी कारगिल के लिये देने का नोटिस लगाया। कई प्लान्टों में सब मजदूरों ने लिख कर दे दिया है कि कारगिल के नाम पर हमारी दिहाड़ी नहीं काटी जाये। हम मैनेजमेन्ट के माध्यम से कोई पैसा नहीं देना चाहते।"

## खम्बे टाँगा टेलीफोन

मैनेजमेन्टों द्वारा वेतन नहीं देने की शिकायतें ले कर लेबर इन्सपैक्टर- लेबर अफसर- डिप्टी लेबर कमिश्नर के पास मजदूर जाते रहते हैं। यह साहब लोग 1936 के कानून का हवाला दे कर कहते रहे हैं कि 1600 रुपये से ज्यादा वेतन वाले मज़दूर नहीं हैं इसलिये वेतन नहीं देने के खिलाफ श्रम विभाग कोई कार्रवाई नहीं कर सकता। हरियाणा में न्यूनतम वेतन 1902 रुपये है। इसके जिक्र पर साहब लोग अकड़ कर बोलते रहे हैं कि 1936 के कानून के अनुसार फरीदाबाद में कोई मजदूर है ही नहीं।

मैनेजमेन्ट द्वारा वेतन नहीं देने और फैक्ट्री से निकाल देने की शिकायतें **सेवा इन्टरनेशनल** की महिला मजदूरों ने श्रम विभाग में की। फिर श्रम विभाग के चक्कर काटते- काटते परेशान हो कर इन महिला मजदूरों ने 2 जुलाई को डिप्टी लेबर कमिश्नर के दफ्तर की मेज- कुर्सियों के पैर ऊपर कर दिये और टेलीफोनों को खम्बों पर टाँग दिया।

**एक मजदूर :** "लन्च में मैं फैक्ट्री में मजदूर समाचार पढ रहा था। एक साहब ने देखा और बोला कि यह अखबार यहाँ नहीं पढना। मैंने लन्च की बात कही तो साहब गरम हो गया। इस पर मैं अखबार को वहीं पटक कर वहाँ से चल पड़ा। एक- एक कर सब मजदूरों ने अखबार पढ लिया।"

### डाक पता :

मजदूर लाईब्रेरी
आटोपिन झुग्गी
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

विकल्पों के लिये प्रश्न (5)

# अपने-अपने "मैं" से दूर होते वस्तु-माल बनते शरीर

भिन्नता को सतही कह सकते हैं। छिलकों के नीचे प्रत्येक का "मैं" लहूलुहान है। यह है वर्तमान। बेशक, यह एक सिलसिले का परिणाम है।

आज से पाँच- छह हजार साल पहले "मैं" और "हम" के बीच शत्रुता के चन्द अँकुर फूटे। व्यक्ति और समाज के बीच यह विषैले वटवृक्ष के समान फैले। संचित श्रम और सजीव श्रम के बीच शत्रुता का विस्तार वर्तमान में ले आया। कम्पनियों- संस्थाओं की सम्पदा के रूप में संचित श्रम द्वारा, मृत श्रम द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने नागपाश में ले लेना ही वर्तमान है।

## काम-काम-काम

मृत श्रम (मशीन, ज्ञान आदि) और सजीव श्रम (काम करते व्यक्ति) के बीच शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों का अर्थ है : काम करो, काम करो, काम करो ! और, आज यह अपने चरम पर है, अति की ओर है।

स्वागत- कक्ष में अनन्त मुस्कान चिपकाये रखना आपका काम हो अथवा खूड- दर- खूड खेत में हल चलाना। सतत् शोखी का प्रदर्शन आपका काम हो अथवा हर रोज सी.एन.सी. मशीनें आपरेट करना। चैम्पियन बनने की होड़ में लगातार जुटे रहना आपका काम हो अथवा प्रयोगशाला में प्रतिदिन नित नये के आविष्कार में जुते रहना। हर शिफ्ट में कपड़ा बुनना आपका काम हो अथवा कक्षा में साल- दर- साल पाठ दोहराना। टूटे- फूटे- बीमार शरीरों की अटूट श्रँखला की चिकित्सा का काम करते हों अथवा दुकान सम्भाले अनन्त भाव- तोल....

काम- काम- काम और काम में ब्रेक लग जाने की चिन्ता ! यह है वर्तमान। कह सकते हैं कि हर एक का शरीर आज वस्तु बन गया है। हम सब मँडी में बिकने वाले माल बन गये हैं। प्रत्येक का भाव लगता है। हमारे मोल का निर्धारण हम क्या करते हैं, कर सकते हैं इसके द्वारा होता है। मजदूर और मैनेजर के बीच इस सन्दर्भ में मात्रा मात्र का भेद है।

## पुर्जे बने शरीर

"किस हद तक इस्तेमाल करने लायक पुर्जा है ?" — यह एक- दूसरे के शरीर को देखने का, नापने का वर्तमान का पैमाना है। पुर्जों के रूप में शरीरों को काटने- तराशने- ढालने की अनन्त प्रक्रिया ने बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों की दुर्गत कर रखी है। जाहिर है कि वर्तमान में एक- दूसरे से सम्बन्ध बहुत पीड़ादायक हैं। लेकिन वर्तमान द्वारा दी जा रही अथाह पीड़ा के अहसास के लिये "हम सब अपने- अपने शरीर को कैसे देखते हैं ?" पर विचार करना जरूरी है।

## हाँको-हाँको खुद को

मोल बढाने तथा काम लायक रखने की वर्तमान की अनिवार्यतायें हर शरीर से उसके "मैं" को जुदा करती हैं। अपने- अपने तन व मस्तिष्क को कष्ट देना प्रत्येक "मैं" की दिनचर्या बन गई है। तन को तानो और दिमाग को घिसो के आदेश हर "मैं" अपने- अपने शरीर को देता दीखता है।

चाय- कॉफी- दारू से काम न चले तो दवाइयाँ लो ! बीमार मत हो और हो ही जाओ तो चटपट में काम लायक बना दें ऐसी दवा लो — "आयोडैक्स मलो और काम पर चलो"। ऐसा करने से शरीर को नुकसान होगा ही। चिर यौवन के लिये बाल रँगो, झुर्रियाँ हटाने के लिये प्लास्टिक सर्जरी करवाओ, टॉनिक- दवायें लो। काम करो।

ई.एस.आई. ने दो उँगली कटने का मुआवजा इतने रुपये और एक आँख फूटने का इतने रुपये रखा है। काम करते- करते मर जाओगे तो क्या ? चिन्ता मत करो, मुआवजा मिलेगा . . .

दूर खड़ा हो आदेश देता लगता "मैं" स्वयं लहूलुहान हो रहा है। मनोविज्ञान में डिग्री वाले चिकित्सकों के संग- संग सन्त- महात्माओं- औलियों- पीरों के ग्राहकों की लाइनें लग रही हैं . ...

"मैं" की अपने शरीर से निकटता के लिये मृत श्रम और सजीव श्रम के बीच शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों की समाप्ति एक अनिवार्यता है। विकल्पों के लिये संचित श्रम के उन रूपों पर विचार करने की आवश्यकता है जिनके साथ सजीव श्रम के मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बन सकें। **(जारी)**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शरीर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स बी—546 नेहरु ग्राउंड फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।